वैदिक काल के भारतीय दर्शन का वर्णन कीजिए

Friday 1

भारतीय आर्यों के इतिहास के सबसे प्राचीन युग को वैदिकयुग कहते हैं इस युग में कई तरह के साहित्य लिखे गये सभी साहित्यों को वैदिक साहित्य कहते हैं

वेद — सम्पूर्ण वैदिक साहित्य का मूलाधार वेद है वेद चार है जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

(1) ऋग्वेद - ऋग्वेद विश्वसाहित्य का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है इसमें वरुण, इन्द्र मरुत अग्नि आदि देवताओं स्तुति मन्त्र है इसमें इस काल की संस्कृति और ऐतिहासिक घटनाओं का कुछ संकेत मिल जाता है।

Saturday 2

(2) यजुर्वेद → यजुर्वेद के दो भाग है - प्रथम शुक्ल यजुर्वेद और द्वितीय कृष्ण यजुर्वेद। इसमें कर्मकांड तथा यज्ञों के मंत्र दिये गये है इसकी रचना इस समय हुई थी जब आर्य सप्तसिन्धु प्रदेश से दक्षिणापूरब बढ़कर कुरुक्षेत्र में फैल गये थे।

(3) सामवेद — इस वेद में 1549 मंत्रों में से केवल 75 मंत्रो की रचना की गई है शेष मंत्र ऋग्वेद से लिये गये है इसमें प्राचीन आर्यों के गान

February 2019

3 Sunday

का सुन्दर विवरण है इसमें उपकाल के संगीत का सुन्दर विवरण है इसमें उपकाल के संगीत का ज्ञान होता है
स्वर, ताल, लय आदि का ज्ञान होता है

अथर्ववेद — इसकी रचना बहुत बाद हुई है इसमें
40 अध्याय 6 हजार मंत्र हैं मंत्रों का पाँचवा भाग
ऋग्वेद से लिया गया है इसमें आर्यों के गृहस्थ जीवन
का उल्लेख है इसमें भूत पिशाचों से रक्षा के
लिए तन्त्र मंत्र दिये गये हैं इसमें ब्रह्मविद्या, दर्शनशास्त्र
और औषधिविज्ञान का भी उल्लेख है।

उपवेद — इन चारों वेदों का एक एक उपवेद भी है

4 Monday

जैसे - आयुर्वेद - यह ऋग्वेद का उपवेद है
इसमें रसायन, रवनिजविज्ञान वनस्पतिविज्ञान, शल्यचि...
का वर्णन है।

धनुर्वेद - यह यजुर्वेद का उपवेद है इसमें शस्त्र बनाने
बनाने का वर्णन है। सुप्रसिद्ध आचार्यों और
परशुराम, विश्वामित्र द्रोणाचार्य कृपाचार्य आदि
कतिपय आचार्य है।

गान्धर्ववेद — यह सामवेद का उपवेद है, इसमें
गायन, नृत्य का वर्णन है

अर्थशास्त्र — यह अथर्ववेद का उपवेद है इसमें राजनीति राज्यों से संधि, युद्ध, अपराध के दण्ड व्यवस्था का वर्णन है।

ब्राह्मणग्रंथ — प्रत्येक वेद के साथ ब्राह्मणग्रंथ का सम्बन्ध है इसमें निश्चित कर्मों के आस्था जागृत उत्पन्न करने तथा निश्चित कर्मों के प्रति उचित श्रद्धा उत्पन्न है।

आरण्यक और उपनिषद — वैदिक काल में भारतीय बहुत चिन्तन किया करते थे कि सृष्टि की उत्पत्ति

कैसे हुई, आत्मा क्या है सृष्टि के सारे क्रियाकलाप किसके इशारे पर चलता है इसी कारण इन साहित्यों को आरण्यक कहते हैं।

इस प्रकार अनेकों अनेक आरण्यक रचे गये लेकिन सबके सब ब्राह्मणग्रंथों के ही भाग है इस प्रकार भारत गहन ज्ञान को ऋषि मुनियों ने अपने शिष्यों को निकट बिठाकर बताया करते थे इन्हीं कारण इसे उपनिषद भी कहते है। इस प्रकार आरण्यक और उपनिषद एक ही ज्ञान के दो भाग है